वर्तमान शिक्षा प्रणाली में संवेगात्मक बुद्धि का महत्व एवं उपयोगिता

प्रो. मोहन लाल 'आर्य'
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद
Orcid Id: 0000-0001-5424-8819

सार:-शिक्षा मानव विकास का आधार है। शिक्षा के माध्यम से ही मानव का विकास इस अवस्था तक पहुॅचा है। शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ उसके सामाजिक, संवेगात्मक एवं मानसिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करती है। शिक्षा का मुख्य लक्ष्य बालक का सर्वांगीण विकास करना होता है, बालक के सर्वांगीण विकास में शिक्षा के साथ-साथ उसके परिवार, विद्यालय, एवं समाज का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। बालक के सर्वांगीण विकास में संवेगात्मक बुद्धि एक विशेष स्थान रखती है। इस दृष्टि से संवेगात्मक बुद्धि को समझना महत्वपूर्ण हो जाता है।

बीजक शब्द: संवेगात्मक बुद्धि, सर्वांगीण विकास, बुद्धि लब्धि, अमूर्त चिन्तन।

प्रस्तावना:-संवेगात्मक बुद्धि को समझने हेतु बुद्धि से आरम्भ करना होता है। संवेगात्मक बुद्धि स्वयं की एवं दसरों की भावनाओं अथवा संवेगों को समझने, व्यक्त करने और नियंत्रित करने की योग्यता है। दसरे शब्दों में, अपनी और दसरों की भावनाओ को पहचानने की क्षमता, भावनाओं के बीच भेदभाव और उन्हें उचित रूप से स्तरीत करना, सोच और व्यवहार मार्गदर्शन करने के लिए भावनात्मक जानकारी का उपयोग को संवेगात्मक बुद्धि कहते हैं। अपनी भावनाओं, संवेगों को समझना उनका उचित तरह से प्रबंधन करना ही भावनात्मक समझ है। व्यक्ति अपनी 'भावनात्मक समझ का उपयोग कर सामने वाले व्यक्ति से ज्यादा अच्छी तरह से संवाद कर सकता है और ज्यादा बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकता है। डेनियल गोलमैन (Daniel Goleman) की पुस्तक भावनात्मक बुद्धि' (Emotional Intelligence) ने इस शब्द को को सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित कर दिया। इससे पहले बुद्धि लब्धि को ही सब कुछ माना जाता था। अब यह माना जाने लगा है कि एक अच्छी बुद्धि लब्धि वाला व्यक्ति अच्छी सफलता प्राप्त सकता है परन्तु अधिक उंचाई पर पहॅुचने के लिए भावनात्मक समझ का होना भी जरूरी है। अच्छी भावनात्मक समझ रखने वाला व्यक्ति कभी भी क्रोध और खुशी के अतिरेक में आ कर अनुचित कदम नही उठाता है।

बुद्धि को सीखने की क्षमता कहा जाता है। अधिक बुद्धि वाला व्यक्ति अधिक गहनता एवं शीघ्रता से सीखने में योग्य होता है। इसके अतिरिक्त इसे 'अमूर्त चिन्तन' के रूप में भी जाना जाता है जिससे परिस्थितियों को समझने में प्रत्ययों एवं संकेतों का प्रभावी उपयोग विशेष तौर पर समस्याओं के समाधान में आंशिक एवं मौखिक संकेतों के द्वारा किया जाता है। कोई भी व्यक्ति, अधिकारी अपने कार्यक्षेत्र में तब ही सफल होता है जब वह अपने मित्रों, सहयोगियों एवं अधिकारियों की समस्याओं एवं परेशानियों को समझ कर उनके साथ व्यावहारिक रूप से पेश आता है। व्यक्ति के व्यावहारिक रूप को निर्मित करने में संवेगात्मक बुद्धि की अहम् भूमिका रहती है। संवेगात्मक बुद्धि द्वारा व्यक्ति में अंतर वैयक्तिक जागरूकता एवं प्रबन्धन का गुण विकसित होता है। संवेगात्मक बुद्धि किसी व्यक्ति में संवेगात्मक योग्यता तथा संवेगात्मक कौशल विकसित करती हैं, जिससे संवेगात्मक सम्बन्धों के निर्वाह में सहयोग प्राप्त होता है। संवेगात्मक बुद्धि को सार्वजनिक रूप में अधिकांश नेताओं के लिए प्रभावपूर्ण बातचीत और ठोस कौशल के लिए जाना जाता है। वे पूरी दनिया को प्रेरित एवं प्रभावित करने के लिए उनके साथ काम कर सकते हैं। वे अपने तरीके से दसरों के लिए कुछ समानता निर्मित कर सकते हैं। बुद्धि के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए बैसलर ने बताया है कि बुद्धि अनेक शक्तियों का समुच्चय है जिसके आधार पर व्यक्ति में प्रयोजनपूर्वक कार्य करने, तर्कपूर्वक सोचने और अपने वातावरण के प्रति उचित प्रकार से व्यवहार करने की समुच्चय योग्यता विकसित होती है। जिससे बुद्धिमान व्यक्ति अपने अनुभवों को प्रभावपूर्वक प्रयोग करता है, अधिक लम्बे समय तक अपने ध्यान को लगाये रखने में समर्थ होता है, एक नवीन अपरिचित परिस्थिति के साथ अधिक तेजी, कम असमंजस्य एवं कम गलतियों के साथ अनुकूलन करता है। संवेगात्मक बुद्धि को आंतरिक प्रतिक्रिया, पर्स्थितिजन्य प्रतिक्रिया एवं आनुवांशिक प्रतिक्रिया के विकास की तुलना में ज्ञानात्मक प्रक्रिया के स्मृति, बोध, तार्किकता एवं समस्या समाधान के मध्यस्थ के रूप में समझा जा सकता है जिसे संवेगात्मक व्यवहार का उच्च रूप माना जाता है। जिसके आधार पर संवेगात्मक ज्ञान में अधिकता होती है जिससे संवेगात्मक व्यवहार में विभिन्नता दृष्टिगत होती है। डेनियल गोलमैन ने अपनी पुस्तक ''ब्रेन साइंसः एक बायोलॉजी की वर्तमान खोज'' में बताया है कि हम लोग एक-दसरे से तार द्वारा इस प्रकार से जुड़े रहत हैं कि हमारे जीवन के प्रत्येक पहेलू पर तथा प्रत्येक संबंध पर इसका गहरा प्रभाव पडता है व्यवहार का विशैला प्रभाव व्यक्ति को क्रोधी, ईर्ष्यालु, कुण्ठित एवं अशिष्ट बना देता है जबकि पौष्टिक व्यवहार व्यक्ति को सम्मानानीय, प्रामाणिक एवं योग्य बनाता है।

यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि हम सभी संवेगात्मकता के लिए बनाये गये हैं और हमारे चारों ओर जो लोग हैं उनके सोच मस्तिष्क से मस्तिष्क द्वारा एक दसरे से जुड़े होते हैं। हमारी दसरों के प्रति अनुक्रिया तथा दसरों की हमारे प्रति अनुक्रिया एक जैवकीय प्रभाव बनाता है तथा हॉर्मोन को हमारे हृदय से रक्षा तंत्र तक भेजता है जिसमें एक अच्छा एवं मजबूत संबंध विटामिन की तरह कार्य करता है तथा बुरा संबंध जहर की तरह कार्य करता है। हम दसरों की भावनाओं की उसी प्रकार पकड़ते है जैसे-सर्दी जुकाम पकड़ते है तथा अकेलापन या एकाकीपन तथा संवेगात्मक दबाव जीवन को संकुचित कर देता है जिससे विषैला व्यवहार विकसित हो जाता है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण गुणों का एक समूह है जिसके आधार पर व्यक्तियों की तुलना की जा सकती है। संवेगात्मक बुद्धि को आंतरिक प्रतिक्रिया, पर्स्थितिजन्य प्रतिक्रिया एवं आनुवांशिक प्रतिक्रिया के विकास की तुलना में ज्ञानात्मक प्रक्रिया के स्मृति, बोध, तार्किकता एवं समस्या समाधान के मध्यस्थ के रूप में समझा जा सकता है जिसे संवेगात्मक व्यवहार का उच्च रूप माना जाता है।

नेन्सी कैन्टर तथा डेनियल गोलमेन ने संवेगात्मक बुद्धि हेतु निम्नलिखित पहलुओं को महत्वपूर्ण माना है-

- परिस्थिति के अनुरूप निर्णय करना।
- संवेदनशीलता रखना।
- व्यवहार कुशलता प्रदर्शित करना।
- दसरों की भावनाओं को उचित प्रकार से समझना।
- प्रतिकूल परिस्थितियों में धैर्य बनाये रखना।
- अपने व्यवहार से दसरों को प्रसन्न रखना।
- जिंदगी में खुशी के पेल ढूंढना।
- संबंधों का सफलतापूर्वक निर्वहन करना।
- सांवेगिक बुद्धि का संप्रत्यय बेहद लोकप्रिय हो गया है और जिन व्यक्तियों के पास यह क्षमता है, उन्हें मिलने वाले लाभों की वजह से

♦सतत रूप से लोकप्रिय हो रहा है। इसके प्रमुख लाभ निम्नांकित हैंः
♦यह मानव के लिए उन सूचनाओं और ताकतों का भी इस्तेमाल करती है जो संवेगों से प्राप्त होती हैं।
♦मानव संवेगों के प्रति यथोर्थवादी और व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाती है।
♦यह सतही जानकारी से परे, स्वयं और दसरों की समझ को सुगम बनाती है।
♦सहानुभूति को प्रोत्साहित और सक्षम करेती है ताकि पारस्परिक संवादों की गुणवत्ता में सुधार हो।
♦केवल संज्ञानात्मक बुद्धि और तकनीकी कौशल से परे जाकर प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान करती है ताकि व्यक्ति विविध बुद्धियों का उपयोग करते हुए उत्कृष्टता और सफलता प्राप्त कर सके।
♦यह निजी संबंधों से लेकर व्यावसायिक संदर्भों और माहौल तक हमारे जीवन की विविध स्थितियों में सांवेगिक बुद्धि के लाभों के निहितार्थ है।
♦ऐसे संवेगों जिन्हें संबंधित व्यक्ति किसी विशेष स्थिति में अधिकाधिक अनुभूत करना चाहते हों के विषय में अधिक साधन और नियंत्रण की अनुमति देती है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को अपने समाज के अनुकूल समायोजन करने की प्रभाविता रखने, दसरे लोगों के साथ प्रभावपूर्ण व्यवहार करने, दसरों के साथ अच्छा आचरण अपने एवं उनसे मिल-जुलकर रहने में सहयोग प्रदान करती है जिससे व्यक्ति में व्यवहार कौशल विकसित होती हैं इस प्रकार वर्तमान षिक्षा प्रणाली में संवेगात्मक बुद्धि का महत्व एवं उपयोगिता स्पष्ट होती है।

निष्कर्ष:- निष्कर्ष रूप मे कहा जा सकता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भावनात्मक बुद्धि का महत्व छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि से कहीं आगे बढ़कर छात्रों के सर्वांगीण विकास और व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सहानुभूति, लचीलापन और प्रभावी पारस्परिक कौशल को बढ़ावा देकर, शैक्षणिक संस्थान छात्रों को न केवल शैक्षणिक रूप से बल्कि उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में भी सफल होने के लिए आवश्यक उपकरणों से लैस कर सकते हैं। शैक्षिक संरचना में भावनात्मक बुद्धि को एकीकृत करने से न केवल अधिक सहानुभूतिपूर्ण सीखने का वातावरण तैयार होता है, बल्कि छात्रों को भविष्य में विकसित होने वाली चुनौतियों के लिए तैयार कर एक श्रेष्ठ नागरिक बनने के लिए का मार्ग तैयार होता है।

****

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1.'आर्य', मोहन लाल, पाण्डेय, एम0पी0 एवं गोला, राजकुमारी (2023), अधिगम एवं विकास का मनोविज्ञान, आर0लाल बुक डिपों, मेरठ।
2. 'आर्य', डॉ0 मोहन लाल, (2014), शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्धन'',आर0 लाल बुक डिपों, मेरठ।
3.'आर्य', डॉ0 मोहन लाल, (2016),''शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्ध'', आर0 लाल बुक डिपों, मेरठ।
4.'आर्य', डॉ0 मोहन लाल, (2017),''अधिगम और शिक्षण'', आर0 लाल बुक डिपों, मेरठ।
5.'आर्य', डॉ0 मोहन लाल, (2017), ''ज्ञान और पाठ्यक्रम'', आर0 लाल बुक डिपों, मेरठ।
6.'आर्य', डॉ0 मोहन लाल, (2014), ''शिक्षा के ऐतिहासिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य'', आर0 लाल बुक डिपों, मेरठ।
7.'आर्य', डॉ0 मोहन लाल, (2017), ''अधिगम के लिए आंकलन'', आर0 लाल बुक डिपों, मेरठ।
8.पाण्डे एवं देव (2003), रियलटिज ऑफ टीचिंग एक्सप्लोरेन्सस विथ विडियो टेप, *न्यूयार्कः रिनहर्ट एण्ड पिटंसन*, पृष्ठ- 55-64।
9.नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
10.Barnes, M.L., & Sternberg, R.J. (1989): Emotional intelligence and decoding of nonverbal cues. Intelligence.
11.Coleman, Andrew (2008). *A Dictionary of Psychology* (3 संस्करण). Oxford University Press. ISBN: 9780199534067.
12.Feldman, D. A. (1999): The Handbook of Emotionally Intelligent Leadership: Inspiring Others to Achieve Results, Leadership Performance Solutions Press, Falls Church, VA.
13.Goleman, Daniel (1995): Emotional Intelligence: Why It Can Matter More Than I.Q. New York: Bantam.
14.Goleman, D. (1998): Working with Emotional Intelligence, Bantam Books, New York.
15.Guilford, J.P. (1967): The nature of intelligence. New York: McGraw-Hill.
16.Guilford, J.P. & Hopener R. (1971): "The Analysis of Intelligence", New york, McGraw Hill, 1971.